भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
मासिक साहित्य पत्रिका
वर्ष-५, अंक-५१, अक्टूबर-२०२५

www.bhartiyaparampara.com

भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-५, अंक-५१, अक्टूबर-२०२५

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुड़ने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

अक्टूबर 2025

साका कैलेण्डर-१९४७, विक्रम संवत-२०८२, अयान-दक्षिणायन, ऋतु-शरद

सोम		06 अश्विन शु. चतुर्दशी/पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा	13 कार्तिक कृ. अष्टमी, मासिक कृष्ण जन्माष्टमी, अहोई अष्टमी	20 कार्तिक कृ. अमावस्या, दीपावली पूजन, चौपडा पूजा	27 कार्तिक शु. षष्ठी, स्कन्द षष्ठी छठ पूजा
मंगल		07 अश्विन शु. पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, वाल्मीकि जंयती	14 कार्तिक कृ. नवमी	21 कार्तिक कृ. अमावस्या	28 कार्तिक शु. सप्तमी
बुध	01 अश्विन शु. नवमी	08 कार्तिक कृ. प्रतिपदा/द्वितीया	15 कार्तिक कृ. दशमी	22 कार्तिक शु. प्रतिपदा, गोवर्धन पूजा, अन्नकूट	29 कार्तिक शु. सप्तमी
गुरू	02 अश्विन शु. दशमी, दशहरा विजय दशमी, गांधी व बहादुर जंयती	09 कार्तिक कृ. तृतीया	16 कार्तिक कृ. एकादशी, रमा एकादशी व्रत	23 कार्तिक शु. द्वितीया, यम दूज, यम द्वितीया	30 कार्तिक शु. अष्टमी, दुर्गा अष्टमी
शुक्र	03 अश्विन शु. एकादशी, पापांकुशा एकादशी व्रत	10 कार्तिक कृ. चतुर्थी, वक्रतुण्ड संकष्टी चतुर्थी, करवा चौथ व्रत	17 कार्तिक कृ. द्वादशी, गोवत्स द्वादशी	24 कार्तिक शु. तृतीया	31 कार्तिक शु. नवमी, अक्षय नवमी, सतयुग
शनि	04 अश्विन शु. द्वादशी/त्रयोदशी प्रदोष व्रत	11 कार्तिक कृ. पंचमी	18 कार्तिक कृ. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत, धनतेरस	25 कार्तिक शु. चतुर्थी, विनायक संकष्टी चतुर्थी	
रवि	05 अश्विन शु. चतुर्दशी	12 कार्तिक कृ. षष्ठी	19 कार्तिक कृ. चतुर्दशी, काली/ रूप चौदस, नरक चतुर्दशी	26 कार्तिक शु. पंचमी, लाभ पंचमी	

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

भारतीय परम्परा™

विजयदशमी / दशहरा पर्व की शुभकामनाएँ

पंचांग के अनुसार आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की दशमी को विजयदशमी, दशहरा अथवा आयुध पूजा के रूप में पूरे देश में बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है। यह पर्व अच्छाई की बुराई पर विजय का प्रतीक है।
इसी दिन भगवान श्रीराम ने रावण का वध कर धर्म की रक्षा की थी तथा माँ दुर्गा ने दस दिनों तक चले युद्ध में महिषासुर का संहार कर देवताओं को विजय दिलाई थी।

इस दिन लोग “**आयुध पूजा**” **(शस्त्र पूजा)** करते हैं, नए कार्य का शुभारंभ करते हैं और विश्वास है कि **इस दिन प्रारंभ किया गया कार्य सफलता दिलाता है।**

आज का दिन क्यों महत्वपूर्ण है?

- **दशहरा वर्ष के साढ़े तीन मुहूर्तों में से एक है, जब किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत अत्यंत मंगलकारी** मानी जाती है।
- इस दिन **अपराजिता पूजा** की जाती है।
- **विजय मुहूर्त** (सूर्यास्त के समय) में पूजा करने का विशेष महत्व है।
- क्षत्रिय अपने **शस्त्रों की पूजा** करते हैं।
- ब्राह्मण **माँ सरस्वती की पूजा** करते हैं।
- व्यापारी अपने **बहीखातों की आराधना** करते हैं।
- रामलीला का समापन और **रावण-दहन का भव्य** आयोजन होता है।
- **बंगाल में दुर्गा पूजा विसर्जन, गुजरात में गरबा-डांडिया, महाराष्ट्र में सिलंगण उत्सव, कश्मीर में खीर भवानी पूजा** और पूरे भारत में मेले व उत्सव इस पर्व को विशेष बनाते हैं।

दशहरा चाहे भगवान राम की विजय के रूप में मनाया जाए या माँ दुर्गा की आराधना के रूप में – दोनों ही रूपों में यह शक्ति, साहस और धर्म की विजय का पर्व है।

पूरा पढ़े www.

शरद पूर्णिमा - मुख्य मान्यताएँ और महत्व

चंद्रमा की निकटता: यह माना जाता है कि शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा पृथ्वी के सबसे निकट होता है। चंद्रमा से निकलने वाले सकारात्मक ऊर्जा से भरे रासायनिक तत्व धरती पर गिरते हैं, जो इसे ग्रहण करने वाले व्यक्ति में सकारात्मकता बढ़ाते हैं। **शरद पूर्णिमा को "कोजागरी पूर्णिमा", "रास पूर्णिमा" और "कौमुदी महोत्सव"** के नाम से भी जाना जाता है।

देवी लक्ष्मी का आगमन: इस रात माँ लक्ष्मी धरती पर विचरण करती हैं। इसीलिए बंगाल में इसे **"कोजागरा" (अर्थात: कौन जाग रहा है?)** भी कहा जाता है। इस दिन माँ लक्ष्मी की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है।

भगवान कृष्ण का महारास: पौराणिक कथाओं के अनुसार, इसी रात भगवान श्रीकृष्ण ने यमुना तट पर गोपियों के साथ महारास रचाया था।

मौसम का बदलाव: इस पूर्णिमा के बाद से धीरे-धीरे सर्दी का मौसम शुरू होने लगता है।

शरद पूर्णिमा की खीर का महत्व

शरद पूर्णिमा की रात को खुले आसमान के नीचे खीर बनाकर रखने की परंपरा है। यह विशेष रूप से स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी मानी जाती है:

अमृत वर्षा: धार्मिक मान्यता है कि इस रात चंद्रमा अमृत (अमृत) बरसाता है, और चाँद की शीतल किरणें खीर पर सीधे पड़ती हैं।

औषधीय गुण: चंद्रमा की किरणों के प्रभाव से खीर में औषधीय गुण आ जाते हैं।

स्वास्थ्य लाभ: इस खीर को खाने से कई तरह की बीमारियों में राहत मिलती है और यह शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है।

- **यह आँखों की रोशनी के लिए लाभदायक है।**
- **यह श्वांस/दमा के रोगियों के लिए एक अच्छी औषधि मानी जाती है।**
- **यह सिर दर्द या माइग्रेन के रोगियों के लिए भी लाभकारी है।**

पूरा पढ़े www.

शरद पूर्णिमा की कहानी, पूजा की विधि www.

चन्द्रमा को छलनी से देखने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। अक्सर यह सवाल मन में उठता रहता है कि, आखिर इस परपंरा के पीछे कारण क्या है?

चलिए बताते हैं.... कहते है **भविष्य पुराण में लिखा है कि चौथ का चाँद देखना वर्जित (मना) होता है। चौथ का चाँद देखने से मिथ्या आरोप लग सकता है या फिर कहें कि कोई झूठा आरोप लग सकता है।** वहीं करवा चौथ भी चौथ की ही तिथि है। यही कारण है कि चाँद को इस दिन खाली देखने की बजाए किसी वस्तू का इस्तेमाल करके (छलनी की ओट से) देखा जाता है।

एक और मान्यता के अनुसार छल से बचने के लिए भी छलनी का इस्तेमाल करते हैं। कहते हैं, प्राचीन समय में **वीरवती** नाम की विवाहित लड़की थी, जिसने शादी के बाद, पहली बार करवा चौथ का व्रत रखा था। उस वक्त, वह अपने मायके में थी और उसके भाईयों से उसका भूखा रहना देखा नहीं गया। इसीलिए उन भाइयों में से सबसे छोटे भाई ने पेड़ की डालियों में एक छलनी के पीछे जलता हुआ दीपक रखा और अपनी बहन वीरवती को भ्रम से चन्द्रमा दिखाकर, उसका व्रत खुलवा दिया। जिससे करवा माता रुष्ट हो गईं और अगले ही पल वीरवती के पति की मृत्यु का समाचार मिला। अपनी इस भयंकर भूल का अहसास जब वीरवती को हुआ तो उसने अगले साल कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी पर फिर से करवा माता का यह व्रत, विधि-विधान से किया और **हर छल से बचने के लिए, इस बार हाथ में छलनी लेकर चंद्र देव के दर्शन किए। इससे प्रसन्न होकर माता ने उसके व्रत को स्वीकार किया और उसके पति को जीवित कर दिया। तब से लेकर अब तक, हमेशा छलनी में से ही चन्द्रमा को देखने की परंपरा है।**

ये भी माना जाता है कि जब महिलाएं चाँद को देखती हैं और फिर पति के चेहरे को छलनी में दीपक रखकर देखती हैं, तो उससे निकलने वाला प्रकाश सभी बुरी नजरों को दूर करता है। साथ ही जब दीपक की पवित्र रोशनी साथी के चेहरे पर पड़ती है तो पति-पत्नी के रिश्ते में सुधार आता है।

करवा चौथ व्रत के नियम www.

करवा चौथ व्रत कथा www.

अहोई अष्टमी का व्रत कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को रखा जाता है। इस दिन अहोई माता की पूजा की जाती है।

संतान की लंबी आयु और सुरक्षा: जहाँ करवा चौथ का व्रत पति की लंबी उम्र के लिए होता है, वहीं अहोई अष्टमी का व्रत महिलाएँ अपनी संतान की लंबी आयु, सुरक्षा और उनके जीवन में सुख-समृद्धि के लिए रखती हैं।

संतान प्राप्ति: शास्त्रों के अनुसार, जिन महिलाओं को संतान सुख की प्राप्ति नहीं हुई है, वे भी इस व्रत को रखती हैं तो उन्हें संतान सुख मिलता है।

व्रत और पूजा विधि की विशेषताएँ

व्रत खोलना: करवा चौथ के विपरीत, अहोई अष्टमी का व्रत तारों को अर्घ्य (अरख) देने के बाद खोला जाता है, न कि चंद्रमा को।

करवे का उपयोग: इस व्रत में नया करवा नहीं लिया जाता है; करवा चौथ के करवे को ही दोबारा उपयोग में लाया जाता है।

वर्जित कार्य: इस दिन चाकू से सब्जी काटना या सुई जैसी किसी नुकीली चीज़ का इस्तेमाल करना वर्जित माना जाता है।

पूजा की तैयारी

अहोई माता का चित्र गेरू से दीवार पर बनाया जाता है, या किसी मोटे वस्त्र पर 'अहोई काढ़कर' (बनाकर) उसे दीवार पर टाँग दिया जाता है। चित्र में आमतौर पर आठ कोष्ठक की एक पुतली बनाई जाती है, जिसके पास साही और उसके बच्चों की आकृतियाँ भी बनाई जाती हैं। सम्पन्न घरों की महिलाएँ चाँदी की होई भी बनवाती हैं। पूजा के लिए ज़मीन को गोबर से लीपकर कलश की स्थापना की जाती है।

भोग: अहोई माता को पूजा के बाद दूध-चावल का भोग लगाया जाता है।

पूरा पढ़े

www.

अहोई अष्टमी व्रत कथा

www.

भारतीय परम्परा की मासिक ई-पत्रिका

नियमित प्राप्त करने हेतु हमें

सम्पर्क करें!

❖ व्हाट्सएप और टेलीग्राम पर प्रत्येक माह के प्रारम्भ में **ई-पत्रिका का नया अंक** प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक प्राप्त न हुआ हो, तो कृपया हमें सूचित करें।

❖ ई-पत्रिका प्राप्त करने के लिए दिए गए **नंबर 7303021123** को अपने मोबाइल में सेव करें और **व्हाट्सएप एवं टेलीग्राम ग्रुप** से जुड़ें।

❖ पत्रिका में जहाँ भी **सोशल मीडिया आइकॉन** दिए गए हैं, उन पर स्पर्श करने से आप सीधे संबंधित लिंक पर पहुँच सकते हैं।

❖ यदि ई-पत्रिका में कोई **त्रुटि नज़र आए तो कृपया हमें अवगत कराएँ।** साथ ही, यदि पत्रिका आपको पसंद आए तो इसे अपने **परिवार और मित्रों के साथ साझा करें।**

❖ भारतीय परंपराओं को संरक्षित रखने एवं पत्रिका को और **अधिक सुरुचिपूर्ण** बनाने के लिए **आपके सुझाव और विचार** हमारे लिए अत्यंत मूल्यवान हैं।

❖ आप अपने क्षेत्र/समुदाय में हो रहे **पारंपरिक आयोजन या विशेष लेख** भी हमें भेज सकते हैं, ताकि उन्हें आगामी अंकों में प्रकाशित किया जा सके।

❖ पत्रिका को और उपयोगी बनाने के लिए **विषय-वस्तु** पर आपके सुझाव **(जैसे – विशेषांक, लोककथाएँ, परंपरागत पर्व या व्यंजन)** हमें अवश्य लिखें।

धनतेरस वह पावन दिवस है जिससे पंच दिवसीय दीपावली महापर्व का विधिवत शुभारंभ होता है। कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को मनाया जाने वाला यह त्योहार, धन, स्वास्थ्य और समृद्धि के आगमन का प्रतीक है।

क्यों और कब मनाते हैं?

यह तिथि, जिसे **धनत्रयोदशी** भी कहा जाता है, **भगवान धन्वंतरि के अवतरण दिवस** के रूप में जानी जाती है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, देवताओं और असुरों द्वारा किए गए **समुद्र मंथन के समय, भगवान धन्वंतरि अपने हाथों में अमृत कलश और आयुर्वेद का ज्ञान लेकर प्रकट हुए थे। स्वास्थ्य के देवता:** धन्वंतरि को चिकित्सा विज्ञान (आयुर्वेद) का जनक और देवताओं का चिकित्सक माना जाता है। उनकी पूजा करने से भक्तों को आरोग्य सुख (उत्तम स्वास्थ्य) और धन लाभ दोनों प्राप्त होता है।

राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस: उनके जन्मदिवस के महत्व को समझते हुए, भारत सरकार ने इस तिथि को **"राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस"** के रूप में मान्यता दी है।

लक्ष्मी जी का आगमन: धन्वंतरि के प्रकट होने के ठीक दो दिन बाद समुद्र मंथन से माता लक्ष्मी प्रकट हुई थीं। यही कारण है कि धनतेरस के दो दिन बाद दीपावली पर धन की देवी माता लक्ष्मी की विशेष पूजा की जाती है।

धनतेरस पर खरीदारी का महत्व (शुभ परंपराएँ)

यह मान्यता है **कि धनतेरस पर किया गया कोई भी शुभ कार्य या वस्तु की खरीदारी तेरह गुना वृद्धि लेकर आती है।** भगवान धन्वंतरि के हाथ में अमृत कलश होने के कारण इस दिन बर्तन खरीदने की परंपरा शुरू हुई। इस दिन विशेष रूप से निम्न वस्तुओं की खरीदारी अत्यंत शुभ मानी जाती है: टूटे-फूटे बर्तनों के स्थान पर तांबे, पीतल या चाँदी के नए बर्तन खरीदना शुभ होता है। **सोने-चाँदी के आभूषण खरीदना समृद्धि का प्रतीक है।** चाँदी को चंद्रमा का प्रतीक माना जाता है, जो शीतलता प्रदान करता है और मन में संतोष रूपी धन का वास कराता है। कुछ क्षेत्रों में **नई झाड़ू खरीदकर उसका पूजन** करना शुभ माना जाता है, जो **घर से दरिद्रता दूर** करने का प्रतीक है। इस दिन **धनिया के बीज खरीदना और उन्हें दीपावली के बाद बाग-बगीचों में बोना भी शुभता का प्रतीक** माना जाता है। **दीपावली पूजन के लिए माता लक्ष्मी और गणेश जी की नई मूर्ति इसी दिन खरीदी जाती है।**

पूरा पढ़े www.

दीपावली के पंच दिवसीय महोत्सव का दूसरा दिन, नरक चतुर्दशी। कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि पर आने वाले इस पावन पर्व को कई नामों से जाना जाता है—जैसे **छोटी दीवाली, रूप चौदस, काली चौदस, और नरक निवारण चतुर्दशी**। यह वह दिन है जब **अंधकार पर प्रकाश** और **कुरूपता पर सौंदर्य** ने विजय प्राप्त की थी।

अंधकार पर विजय और मुक्ति का पर्व

पौराणिक कथाओं के अनुसार, इसी दिन भगवान श्री कृष्ण ने अपनी पत्नी सत्यभामा और देवी काली के साथ मिलकर दुष्ट नरकासुर का वध किया था। इस विजय के उपलक्ष्य में, उन्होंने **नरकासुर की कैद से सोलह हज़ार एक सौ कन्याओं** को मुक्त कराकर उन्हें सम्मान दिया। इसी कारण इस दिन दीयों की बारात सजाई जाती है, जो नरक से मुक्ति पाने और न्याय की जीत का प्रतीक है।

यम दीपक: इस दिन सूर्यास्त के बाद घर के मुख्य द्वार पर **यमराज के नाम का चौमुखा दीपक** जलाने की परंपरा है। माना जाता है कि ऐसा करने से **अकाल मृत्यु का भय** टल जाता है।

स्वर्ग की प्राप्ति: यह भी मान्यता है कि कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की सुबह, **शरीर पर तेल लगाकर अपामार्ग की पत्तियाँ (चिचड़ी) जल** में डालकर स्नान करने और विधि-विधान से पूजा करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

सौंदर्य का उत्सव: रूप चतुर्दशी

नरक चौदस को रूप चतुर्दशी क्यों कहते हैं, इसकी **कथा राजा हिरण्यगर्भ** से जुड़ी है। जब तपस्या के दौरान उनके शरीर पर कीड़े पड़ गए और वह सड़ने लगा, तो नारद मुनि ने उन्हें मार्गदर्शन दिया। नारद जी के कहने पर राजा ने **कार्तिक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय से पूर्व उबटन** (आटा, बेसन, हल्दी और तेल) लगाकर स्नान किया और रूप के देवता श्री कृष्ण की पूजा-आरती की। इसके प्रभाव से उनका शरीर पुनः स्वस्थ और सुंदर हो गया।

स्वच्छता और सौंदर्य का विशेष महत्व है। लोग घरों की सफाई करते हैं और विशेष उबटन से स्नान कर स्वयं को सजाते हैं। शाम के समय सौंदर्य और आरोग्य के दाता भगवान श्री कृष्ण की पूजा की जाती है।

काली चौदस की विशेष पूजा विधि www.

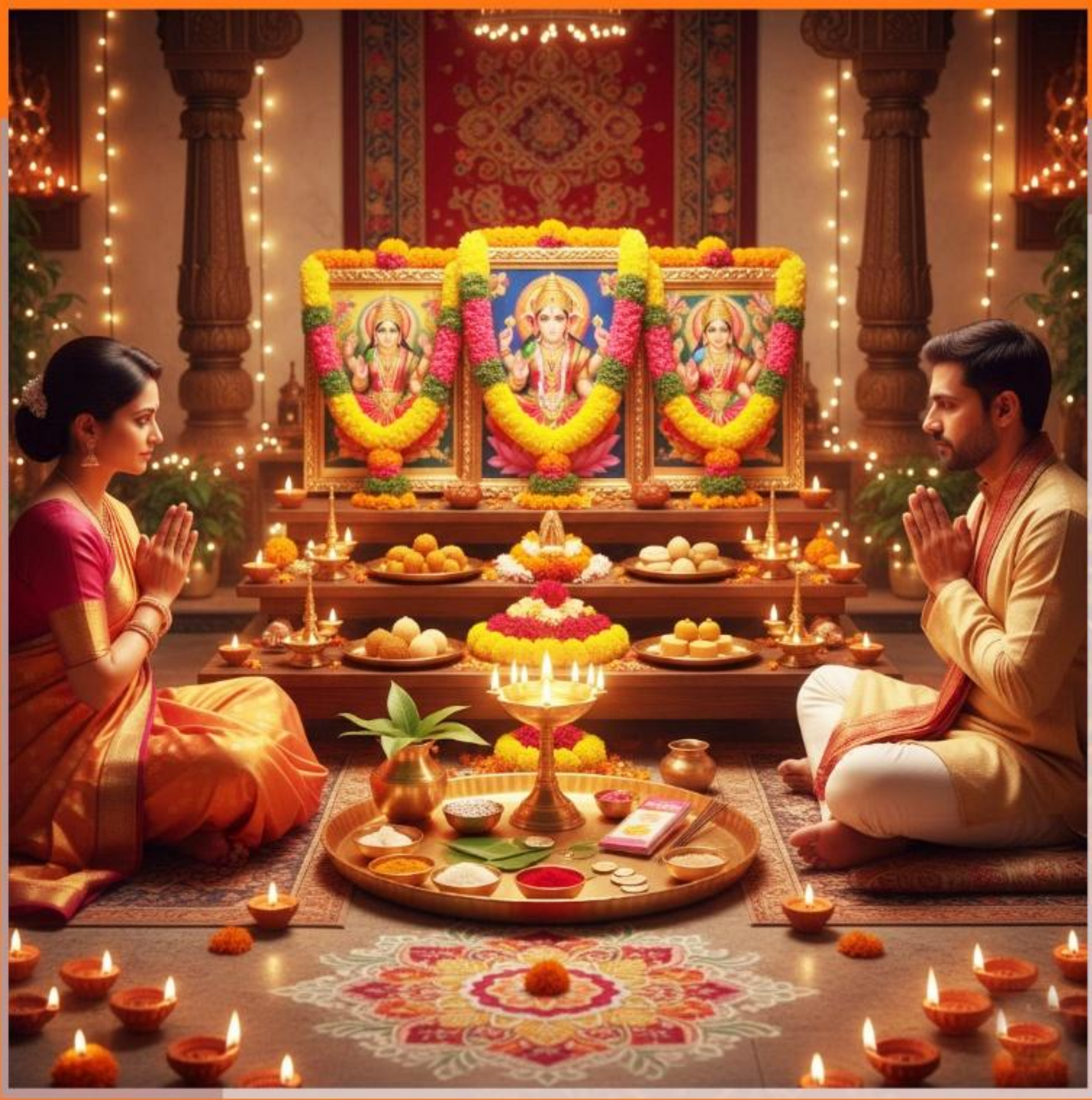

दीपावली, या दीवाली, केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि भारत की संस्कृति, आस्था और इतिहास का एक भव्य संगम है। रोशनी में डूबे इस पाँच दिवसीय पर्व की रौनक अद्वितीय है। हालाँकि हम इसे मुख्यतः राम, सीता और लक्ष्मण के अयोध्या लौटने की खुशी में मनाते हैं, लेकिन शास्त्रों और इतिहास के अनुसार यह पर्व विभिन्न युगों की महत्वपूर्ण घटनाओं का साक्षी रहा है।

धार्मिक और पौराणिक कारण

माँ लक्ष्मी का अवतरण : समुद्र मंथन से अमावस्या की रात लक्ष्मी जी का प्रकट होना।

भगवान विष्णु और बलि: वामन अवतार द्वारा लक्ष्मी जी को बलि से मुक्त कराना।

रामायण प्रसंग: राम, सीता और लक्ष्मण के 14 वर्ष का वनवास समाप्त कर अयोध्या आगमन।

नरकासुर वध : श्रीकृष्ण द्वारा असुर नरकासुर का वध और कन्याओं की मुक्ति।

पांडवों की वापसी : 12 वर्ष का वनवास और अज्ञातवास पूरा कर पांडवों का घर लौटना।

जैन धर्म : इस दिन भगवान महावीर को मोक्ष की प्राप्ति हुई।

सिख धर्म : गुरु हरगोबिन्द जी की कैद से मुक्ति – बंदी छोड़ दिवस।

आर्य समाज : महर्षि दयानन्द सरस्वती का अवसान और आर्य समाज की स्थापना।

विक्रमादित्य का राजतिलक: इसी दिन भारत के महान सम्राट विक्रमादित्य का राज्याभिषेक।

सांस्कृतिक और सामाजिक पहलू

कृषि पर्व : खरीफ की फसल कटाई का उत्सव।

व्यापारिक नववर्ष : व्यापारी अपने खातों की नई किताबें शुरू करते हैं।

आर्थिक दृष्टि : खरीदारी, उपहार और आभूषणों का शुभ समय।

दीपावली का संदेश

दीपावली सिर्फ़ रोशनी का त्योहार नहीं, बल्कि अंधकार पर प्रकाश, असत्य पर सत्य और बुराई पर अच्छाई की विजय का उत्सव है। यह भाईचारे, प्रेम और एकता का संदेश देता है। घर-घर में दीपक, रंगोली, मिठाइयाँ और आतिशबाजी इस पर्व की रौनक को और बढ़ाते हैं।

काली चौदस की विशेष पूजा विधि www.

क्यों मनाई जाती है दीपावली??

www.

दीपावली पूजन सामग्री और संपूर्ण प्रक्रिया

www.

दीपावली पर किए जाने वाले विशेष उपाय

www.

भारतीय परम्परा ™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

अगर आप अपने
'शब्दों के मोती'
भारतीय परम्परा
की माला में पिरोना
चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट
पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को गोवर्धन पूजा का पर्व मनाया जाता है। यह दिन भगवान श्रीकृष्ण द्वारा इंद्र के अहंकार को नष्ट करने और गोवर्धन पर्वत को उठाकर गोकुल वासियों की रक्षा करने की स्मृति में समर्पित है।

गोवर्धन पूजा अनुष्ठान

1. तैयारी और स्थापना:

- गोवर्धन पूजा के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर शरीर पर तेल लगाकर स्नान करना चाहिए और स्वच्छ वस्त्र धारण कर पूजा की तैयारी करें।
- अपने इष्ट देवता का ध्यान करें।
- घर के मुख्य दरवाजे के सामने **गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत की आकृति** बनाएँ। (कहीं-कहीं पर मानव आकार के दो पुतले भी बनाए जाते हैं।)
- इस पर्वत को फूलों से सजाएँ और उस पर अपामार्ग (चिरचिटा) की टहनियाँ अवश्य लगाएँ।

2. पूजन विधि:

- पूजा में माँ लक्ष्मी के पूजन के लिए उपयोग में लाया गया अखंड दीप ही रखा जाता है। पूजा सामग्री भी वही काम में ली जाती है।
- गोवर्धन पर्वत पर रोली, कुमकुम, अक्षत और फूल अर्पित करें।
- इसके बाद दही और बिलोवन (मट्ठा/छाछ) का भोग लगाएँ।
- गन्ने (जो लक्ष्मी पूजन में चढ़ाया था) का ऊपरी भाग पर्वत पर चढ़ाएँ।
- गन्ने के ऊपरी भाग को पकड़कर पर्वत की सात परिक्रमा लगाएँ।
- परिक्रमा के बाद, हाथ जोड़कर इस मंत्र से प्रार्थना करें:

गोवर्धन धराधार गोकुल त्राणकारक।
विष्णुबाहु कृतोच्छ्राय गवां कोटिप्रभो भव: ॥

(अर्थात्: हे गोवर्धन! आप पृथ्वी को धारण करने वाले और गोकुल की रक्षा करने वाले हैं। भगवान विष्णु के हाथों द्वारा ऊँचे उठाए गए, आप करोड़ों गायों के स्वामी हैं, आप मुझ पर कृपा करें।)

पूरा पढ़े www.   गोवर्धन पूजा क्यो करते हैं ? www.

भारतीय संस्कृति और हिंदू धर्म में भाई-बहन के अटूट प्रेम को समर्पित तीन प्रमुख तिथियाँ हैं: **रक्षाबंधन, होली की दूज, और दीपावली के बाद आने वाली भाई दूज**। इन तीनों पर्वों का मूल भाव भाई-बहन के रिश्ते को स्थायित्व और निश्चय प्रेम देना है। **दीपावली के बाद आने वाली इस दूज को "भैया दूज," "यम द्वितीया," या "भातृ द्वितीया" भी कहा जाता है।** यह पर्व भाई-बहन के प्रेम को पवित्र और पावन बनाकर उनके संबंध को और भी ज्यादा दृढ़ बनाता है।

यम द्वितीया: दीर्घायु और प्रेम का बंधन

शास्त्रों के अनुसार, यम द्वितीया के दिन बहन भाई को तिलक लगाकर उसकी लंबी उम्र और सुख-समृद्धि की प्रार्थना करती है। यह पर्व यमराज को समर्पित है, इसलिए उनका पूजन भी किया जाता है। ब्रज मंडल क्षेत्र में इसका विशेष महत्त्व है। यहाँ भाई अपनी बहन के घर जाकर टीका लगवाता है और बहन के हाथ का पकाया हुआ भोजन ग्रहण करता है। इस क्षेत्र में भाई-बहन का हाथ पकड़कर यमुना नदी में स्नान करने की परंपरा है। बहन यमुना के जल में खड़े होकर भाई को टीका लगाती है। ऐसी मान्यता है कि ऐसा करने से भाई की उम्र बढ़ती है और वह दीर्घायु होता है।

पूजन विधि और मान्यताएँ

- भाई दूज की पूजन विधि अत्यंत भावनात्मक और प्रतीकात्मक है:
- चावल के घोल से पूजा: बहन चावल पीसकर उसका गाढ़ा घोल बनाती है और भाई की हथेली पर लगाती है। इस घोल के ऊपर सिंदूर लगाकर कद्दू के फूल, पान, सुपारी और पैसा रखकर उस पर पानी डाला जाता है।
- मंत्रोच्चारण: हथेली की पूजा के दौरान बहन यह मंत्र बोलती है:

"गंगा पूजे यमुना को यमी पूजे यमराज को,
सुभद्रा पूजे कृष्ण को, गंगा यमुना नीर बहे मेरे भाई की आयु बढ़े।"

- **आरती और कलावा:** उपरोक्त मंत्र बोलकर हथेली की पूजा पूरी होती है। बहनें तिलक लगाकर भाई की आरती उतारती हैं और फिर उनकी हथेली में कलावा (रक्षासूत्र) बाँधती हैं। मुख मिष्ठान: भाई का मुँह मीठा करने के लिए उन्हें माखन-मिश्री खिलाई जाती है।

पूरा पढ़े www.

आंगन रोशन दीप से, आलोकित घर बार ।
रूप चंद्रमा सा लगे, जगमग है त्योहार ॥

अंतस में दीये जले,मचले हैं अरमान ।
ज्यों मंदिर में आरती, मस्ज़िद बीच अज़ान ॥

दीवाली के पर्व पर, लाए स्वजन समीप ।
अंधकार हरता रहा,नन्हा सा इक दीप ॥

दीपक रोशन हो वहां, जिस घर है अँधियार ।
सच ही कहता कवि नलिन, हो जग में उजियार ॥

कुमकुम के पगले लिए, माँ आई है द्वार ।
माँ की कर आराधना, देगी पुन्य अपार ॥

स्वच्छ बने वातावरन, हम सब करें प्रयास ।
हर इक मन से तम मिटे, हो हर ओर उजास ॥

जीवन में सुख,शांति हो, लक्ष्मी का हो वास ।
घर में हो न अभाव कुछ, धन वैभव हो पास ॥

खुशहाली का पर्व यह, कर लो रूप निखार ।
रूप चाँदनी सा लगे, करता जब श्रृंगार ॥

माँ लक्ष्मी की आरती, कर अरपन फल फूल ।
सब मिलकर वंदन करें, हो सब विधि अनुकूल ॥

- नलिन खोईवाल जी, इंदौर (मध्य प्रदेश)

निकलकर फिर आएगा सूरज,
छंट जाएगा यह अंधियारा।

डाल-डाल पर फूल खिलेंगे,
महकेगी फिर सारी बगिया।

गीतों के होंठों पर चुम्बन होंगे,
खुशी से नाचेगी सारी दुनिया।

हुलसकर फिर आएगा उजेला,
चमक जाएगा मन उजियारा।

थिरकेंगे फिर थापों पर पाँव,
खुशियों के अब बाँध नुपूर।

ढोल-मृदंग की तालों से फिर,
होंगे सन्नाटों के सन्नाटे दूर।

फिर शुभंकर आएगा द्वारे, हरषाएगा मन दुखियारा।

मलय-पवन से महकेगा मन,
हवा नागिन न उगलेगी ज़हर।

नहीं किसी की साँस घुटेगी,
न वक़्त किसी पे ढाएगा कहर।

फिर झूमकर आएगा पावस,
हरियाएगा दूब-गलियारा।

- अशोक आनन जी, मक्सी, शाजापुर (मध्य प्रदेश)

मेरी दीवाली: भारतीय संस्कृति और पर्वों का महत्त्व

**"सदियों रहा है दुश्मन, दौरे-जमां हमारा,
यूनान, मिस्र, रोमा – सब मिट गए जहाँ से,
क्या बात है कि हस्ती मिटती नहीं यहाँ से।"**

ये पंक्तियाँ केवल गर्वोक्ति नहीं, बल्कि एक सच्चाई हैं कि विश्व की श्रेष्ठतम संस्कृतियों में एक भारतीय संस्कृति आज भी जीवित है। यह संस्कृति केवल मनुष्यों तक सीमित नहीं, बल्कि इसमें पशु-पक्षी, वनस्पति, जीव-जंतु, नदियाँ, पर्वत, और संपूर्ण प्रकृति से आत्मीय संबंध जोड़ने का प्रयास किया गया है। हमारे व्रत, उपवास और त्योहार इसी संस्कृति के मूल आधार हैं। यही कारण है कि भारत, जहाँ हिंदू धर्मावलंबी सबसे अधिक पर्व मनाते हैं, में दीपावली त्यौहार का एक विशेष स्थान हैं।

दीपावली: जीवन को ऊर्जावान बनाने की योजना - ऋषियों ने त्योहारों को जीवन को सरस, सुंदर और ऊर्जावान बनाने की योजना के रूप में रखा। हर त्योहार का एक वैज्ञानिक और व्यावहारिक महत्त्व होता है।

ऋतु परिवर्तन: त्योहारों का निर्धारण इस दृष्टिकोण से हुआ कि मनुष्य प्रकृति के साथ सहचर्य और तादात्म्य स्थापित करे तथा पर्यावरण की रक्षा करे।

वैज्ञानिक लाभ: दीपावली वर्षा ऋतु के बाद आती है और यह गर्मी व सर्दी के संधिकाल का समय होता है। बरसात से फैली गंदगी और कीड़े-मकोड़ों को दूर करने के लिए घरों की सफाई और पुताई की जाती है। दीवारों पर चूना करने का उद्देश्य भी यही है कि कीटाणु नष्ट हो जाएँ।

कार्तिक अमावस्या की रात का अँधेरा दीपों की पंक्तियों से जगमगा उठता है, जो एक अद्वितीय आनंद प्रदान करता है।

आज भले ही बिजली की सजावट आम हो गई है, परंतु सरसों के तेल से जलने वाले दीपक का आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व अब भी अतुलनीय है।

पाँच दिवसीय महापर्व: दीपावली

दीपावली पाँच दिनों तक मनाई जाती है – धनतेरस से लेकर भाई दूज तक।

1. धनतेरस: समृद्धि और आरोग्य का शुभ आरंभ

धनतेरस, जिसे धन त्रयोदशी भी कहते हैं, पाँच दिवसीय दीपावली उत्सव का पहला और सबसे शुभ दिन है। यह दिन घरों में धन और आरोग्य (अच्छी सेहत) की कामना के साथ शुरू होता है।

धन और आयु के देवता: इस दिन विशेष रूप से भगवान धन्वंतरि (देवताओं के वैद्य और आयुर्वेद के जनक) और कुबेर (धन के देवता) की पूजा की जाती है।

खरीददारी की परंपरा: मान्यता है कि इस दिन खरीदी गई वस्तुएँ, विशेषकर सोना, चाँदी, और नए बर्तन, तेरह गुना बढ़ती हैं और वर्ष भर समृद्धि लाती हैं। इसीलिए लोग शुभता के प्रतीक के रूप में धातु की वस्तुएँ खरीदते हैं।

यम दीपक: इस रात परिवार के सदस्यों की अकाल मृत्यु से रक्षा के लिए घर के बाहर यमराज के नाम का एक दीपक जलाया जाता है, जिसे 'यम दीपक' कहा जाता है।

2. नरक चतुर्दशी (छोटी दीवाली): बुराई पर अच्छाई की विजय

यह पर्व का दूसरा दिन है, जो अंधेरे पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है।

पौराणिक कथा: इसी दिन भगवान कृष्ण ने अत्याचारी नरकासुर का वध किया था और उसकी कैद से 16,000 राजकुमारियों को छुड़ाया था। यह इस बात का प्रतीक है कि अत्याचार और अहंकार का अंत निश्चित होता है।

स्वास्थ्य और सौंदर्य: इस दिन सूर्योदय से पहले स्नान करने की परंपरा है। स्नान से पूर्व उबटन लगाया जाता है, जिससे शरीर के रोम छिद्र खुल जाते हैं और शरीर में पर्याप्त ऑक्सीजन पहुँचती है, जो त्वचा के स्वास्थ्य के लिए वैज्ञानिक रूप से लाभदायक है।

3. दीपावली (महालक्ष्मी पूजन): ऐश्वर्य और ज्ञान का मिलन

दीपावली इस महापर्व का सबसे प्रमुख और केंद्रीय दिन है। इसी दिन के लिए पूरे घर की साफ-सफाई और सजावट की जाती है।

महालक्ष्मी का आह्वान: मान्यता है कि इसी रात देवी महालक्ष्मी पृथ्वी पर विचरण करती हैं। उन्हें प्रसन्न करने के लिए घर के कोने-कोने में दीपक जलाए जाते हैं और रंगोली सजाई जाती है।

पूजन और समृद्धि: इस दिन गणेश-लक्ष्मी जी का विशेष पूजन किया जाता है, जहाँ सुख-

समृद्धि, धन, वैभव और ज्ञान की कामना की जाती है। व्यापारी वर्ग इस दिन अपने नए बही-खातों की शुरुआत करते हैं।

राम का आगमन: यह वह दिन भी है जब भगवान श्रीराम चौदह वर्ष का वनवास पूर्ण करके अयोध्या लौटे थे। उनके स्वागत में अयोध्यावासियों ने घी के दीपक जलाए थे, इसीलिए इसे **'दीपों का पर्व'** कहा जाता है। तभी से गरीब की झोपड़ी से लेकर महलों तक दीप प्रज्वलित करने की परंपरा जीवित है।

4. **अन्नकूट:** भगवान को 56 प्रकार के व्यंजनों का भोग लगाया जाता है। अन्नकूट के प्रसाद में सभी सब्ज़ियाँ एक साथ बनाई जाती हैं, ताकि मनुष्य के शरीर को सारे विटामिन और प्रोटीन एक साथ मिलें, जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।

5. **भाई दूज (यम द्वितीया):** इस दिन नदियों में स्नान, वह भी उबटन व तेल लगाकर, स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभदायक है। भाई दूज के बारे में मान्यता है कि इस दिन भाई-बहन हाथ पकड़कर यमुना स्नान करते हैं तो उनके सारे पाप नष्ट होते हैं और कष्टों से सुरक्षा मिलती है।

मेरी दीवाली: आत्मकेंद्रितता से विश्वबंधुत्व की ओर

दीपावली की रात जब पटाखे फूटते हैं, मुझे वह दृश्य याद आता है –

एक ओर लोग आनंद में झूम रहे थे, वहीं दूसरी ओर एक छोटा बालक मिट्टी के दीपक बेच रहा था, उसकी आँखों में करुणा और उम्मीद थी। यह दृश्य हमें हमारी बदलती सोच का आईना दिखाता है। हम केवल अपनी दीपावली मनाते हैं, पर यह नहीं सोचते कि दूसरों की भी होनी चाहिए। यदि यह आत्मकेंद्रित प्रवृत्ति बढ़ती रही, तो भारतीय संस्कृति को बचाना कठिन हो जाएगा। इसलिए आवश्यक है कि हम आत्मकेंद्रित न होकर विश्वबंधुत्व की भावना अपनाएँ। जब हम अपने पड़ोसी और समाज के हर वर्ग की दीपावली की चिंता करेंगे, तभी हमारी अपनी दीपावली भी सार्थक होगी।

दीपावली केवल दीपों का उत्सव नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक संदेश है।

अंत में इतना ही कहना चाहती हूँ। **एकल से हम संयुक्त की ओर बढ़े। जब सबकी दीवाली मनेगी तो अपनी भी मन जायेगी।**

- उषा चतुर्वेदी जी, भोपाल (मध्य प्रदेश)

त्यौहार, मेरे लिए, सिर्फ़ कैलेंडर पर अंकित एक तारीख नहीं होते। ये जीवन की एक जीवंत धड़कन हैं, जो हमें रोज़मर्रा की भाग-दौड़ से निकालकर एक पल रुककर साँस लेने का मौका देते हैं। ये वो रंग हैं, जो **जीवन की सफ़ेद-काली तस्वीर में नई जान भर** देते हैं।

मेरी नज़र में, दीवाली इन्हीं रंगों और धड़कनों का सबसे ख़ूबसूरत संगम है। **यह सिर्फ़ दीपों का नहीं, बल्कि दिलों का त्यौहार है।**

दीवाली की शुरुआत मेरे लिए हफ़्तों पहले ही हो जाती है। घर की साफ़-सफ़ाई के साथ-साथ मन की भी सफ़ाई शुरु हो जाती है। यह एक मौका होता है, जब हम अपने घर के हर कोने को चमकाते हैं, पुराने सामान को हटाते हैं और एक नई शुरुआत के लिए जगह बनाते हैं। यह सिर्फ़ बाहरी सफ़ाई नहीं है, बल्कि एक तरह का आंतरिक शुद्धिकरण है। जब घर के हर कोने से धूल हटती है, तो मन से भी पुरानी शिकायतें और गिले-शिकवे दूर होने लगते हैं।

दीवाली का सबसे प्यारा पहलू है, इसका सामाजिक ताना-बाना। यह वो समय है, जब परिवार के सभी सदस्य एक साथ आते हैं। दूर-दराज रहने वाले भाई-बहन, रिश्तेदार और दोस्त सब एक छत के नीचे इकट्ठा होते हैं।

पकवानों की ख़ुशबू, बच्चों की हँसी और बड़ों की बातें, सब मिलकर एक ऐसा माहौल बनाते हैं, जिसकी तुलना किसी और चीज़ से नहीं की जा सकती। यही वो पल हैं, जब हम अपनी परंपराओं और जड़ों से फिर से जुड़ते हैं।

शाम होते ही घर रोशनी से जगमगा उठता है। **मिट्टी के छोटे-छोटे दीयों की रोशनी में एक अलग ही सुकून होता है।** ये दिए सिर्फ़ घर को रोशन नहीं करते, बल्कि अँधेरे पर रोशनी की जीत का संदेश देते हैं। पटाखों का शोर और आसमान में रंग-बिरंगी आतिशबाज़ी भले ही कुछ देर के लिए मन को ख़ुश करती है, लेकिन **मेरे लिए असली दीवाली तो घर के दरवाज़े पर जलते दीयों और उन पर पड़ने वाली परछाइयों में है।**

मेरे लिए दीवाली का मतलब सिर्फ़ लक्ष्मी-गणेश की पूजा करना नहीं है, बल्कि उस भावना को महसूस करना है जो इस पूजा के पीछे है। **लक्ष्मी यानी समृद्धि और गणेश यानी ज्ञान।** यह त्यौहार हमें सिखाता है कि **जीवन में समृद्धि तभी आती है, जब हम ज्ञान और सही**

दिशा में आगे बढ़ते हैं। यह सिर्फ़ धन की नहीं, बल्कि रिश्तों की, ख़ुशियों की और सद्भाव की समृद्धि का त्यौहार है।

दीवाली का सबसे ख़ूबसूरत हिस्सा होता है, **मिठाइयों और उपहारों का आदान-प्रदान। यह सिर्फ़ खाने की चीज़ें नहीं, बल्कि प्यार और सम्मान का प्रतीक हैं।** जब हम अपने पड़ोसियों और दोस्तों के घर मिठाई लेकर जाते हैं, तो हम उनके साथ अपनी ख़ुशियाँ भी बाँटते हैं। यही **बाँटना और साझा करना ही इस त्यौहार की असली आत्मा है।**

आख़िर में, मेरे लिए दीवाली एक त्यौहार नहीं, बल्कि एक अनुभव है। यह हमें सिखाता है कि जीवन में कितनी भी चुनौतियाँ क्यों न हों, रोशनी हमेशा अँधेरे को दूर कर सकती है। यह सिर्फ़ एक रात का जश्न नहीं, बल्कि एक ऐसी सीख है, जो हमें साल भर याद रखनी चाहिए **– हमेशा उम्मीद की एक किरण जलाए रखें।**

– सत्यम मिश्रा जी

भारतीय संस्कृति का इतिहास जब-जब पढ़ा जाता है, उसमें सबसे पहले हमारी जीवनशैली और परंपराओं की झलक मिलती है। यहाँ हर मौसम, हर ऋतु और हर अवसर पर किसी न किसी पर्व का आयोजन होता आया है। यही पर्व-त्योहार भारतीय समाज की आत्मा हैं। मेरे लिए त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एक ऐसी जीवनधारा है जिसमें **सामाजिक एकता, पारिवारिक स्नेह और आध्यात्मिक शांति तीनों का संगम मिलता है।**

भारत में अनेकों त्योहार मनाए जाते हैं – होली, दीपावली, रक्षाबंधन, ईद, क्रिसमस, लोहड़ी, ओणम आदि। इनमें से यदि मुझे किसी एक त्योहार की चर्चा करनी हो, तो निस्संदेह मैं दीपावली का चुनाव करूँगा।

दीपावली का पौराणिक महत्व

दीपावली का नाम आते ही मन में दीपों की जगमगाहट, मिठाइयों की खुशबू और उत्साह का अनोखा संसार सजीव हो उठता है। पौराणिक मान्यता के अनुसार **भगवान रामचंद्रजी 14 वर्ष का वनवास पूरा कर अयोध्या** लौटे थे। उनके स्वागत में नगरवासियों ने **घर-घर दीप** जलाए। तभी से यह परंपरा आज तक जीवित है।

जैन धर्म में इसे महावीर स्वामी के निर्वाण दिवस के रूप में भी महत्व प्राप्त है, जबकि सिख परंपरा में **गुरु हरगोविंद जी की जेल से मुक्ति** का दिन माना जाता है। इस तरह दीपावली केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं, बल्कि अनेक दृष्टियों से ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व भी रखती है।

दीपावली की परंपराएँ

दीपावली पाँच दिनों का त्योहार है–

1. धनतेरस – खरीदारी और आयुर्वेदिक पूजन।

2. नरक चतुर्दशी (काली चौदस) – बुरी शक्तियों पर विजय का प्रतीक।

3. लक्ष्मी पूजन/मुख्य दीपावली – घरों में दीप सजाकर माता लक्ष्मी का स्वागत।

4. गोवर्धन पूजा – भगवान श्रीकृष्ण की अन्नकूट परंपरा।

5. भाई दूज – भाई-बहन के स्नेह का पर्व।

इन पाँचों दिनों का क्रमिक आयोजन न केवल धार्मिकता से जुड़ा है बल्कि इसमें परिवार और समाज को जोड़ने की गहरी भूमिका भी छिपी है। घर की सफाई, नए वस्त्र, पकवान, रिश्तेदारों का आना-जाना – यह सब जीवन में नई ऊर्जा भरते हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

- मेरी नज़र में दीपावली केवल **उत्सव नहीं बल्कि सामाजिक एकजुटता का माध्यम है।**
- यह हमें **एक-दूसरे से जोड़ती** है।
- **अमीर-गरीब** सभी दीप जलाकर बराबरी का अनुभव करते हैं।
- व्यापारिक जगत के लिए यह **नए वर्ष** की शुरुआत है।
- गांव और शहर दोनों जगह दीपावली **आनंद और उल्लास** का समान भाव लेकर आती है।

इस पर्व के माध्यम से **"अंधकार से प्रकाश की ओर"** बढ़ने का संदेश मिलता है। यही कारण है कि **दीपावली भारतीय संस्कृति की आत्मा कही जाती है।**

आधुनिक युग में बदलता स्वरूप

आज दीपावली मनाने के तरीकों में बहुत बदलाव आया है। पहले लोग **मिट्टी के दीये** जलाकर पूरे घर को आलोकित करते थे, अब उसकी जगह **बिजली की झालरों** ने ले ली है। पहले घर-घर मिठाइयाँ स्वयं बनती थीं, अब बाजार की सजावटी पैकिंग वाली मिठाइयाँ जगह लेने लगी हैं। सबसे बड़ा परिवर्तन पटाखों के रूप में दिखता है। शोर और प्रदूषण ने इस पर्व की पवित्रता को कहीं-कहीं कम कर दिया है। यही कारण है कि आज समाज में **"ग्रीन दीपावली"** का संदेश दिया जाने लगा है।

मेरे विचार से दीपावली की सच्ची खुशी केवल भौतिक सजावट में नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन को प्रकाशमान बनाने में है। **जब हम किसी जरूरतमंद के घर एक दीपक जलाते हैं, तभी दीपावली का सही अर्थ साकार होता है।**

मेरी व्यक्तिगत दृष्टि

मेरे लिए दीपावली केवल पूजा-पाठ तक सीमित नहीं है। यह पर्व मुझे **आत्ममंथन** का अवसर देता है। जिस प्रकार हम घर की सफाई करते हैं, उसी प्रकार **हमें अपने मन के अंधकार को भी मिटाना** चाहिए। ईर्ष्या, क्रोध, लोभ और स्वार्थ जैसे अंधकार जब तक हमारे भीतर रहेंगे, तब तक दीपावली अधूरी है। **बचपन की दीपावली आज भी स्मृतियों में ताज़ा है** – मिट्टी के दीये, दादी की कहानियाँ, माँ के हाथ की बनी मिठाइयाँ और मोहल्ले में सभी का

मिलकर पटाखे फोड़ना। आज जब चारों ओर कृत्रिमता और प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है, तब वे छोटे-छोटे पल और भी अनमोल लगते हैं।

निष्कर्ष - दीपावली केवल रोशनी का नहीं, बल्कि मानवता का पर्व है। यह हमें सिखाती है कि अंधकार कितना भी गहरा क्यों न हो, एक छोटा-सा दीपक भी उसे मिटा सकता है। इसी प्रकार हममें से प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने अंदर का दीप जलाए और समाज में प्रेम, करुणा और सहयोग का प्रकाश फैलाए, तो सम्पूर्ण विश्व आलोकित हो सकता है।

इसलिए मेरी नज़र में दीपावली का अर्थ है –

👉 **प्रकाश का फैलाव,**

👉 **आत्मा की शुद्धि,**

👉 **और सबको जोड़ने वाला एक उत्सव।**

– अनिल प्रसाद सिन्हा जी, 'मधुकर', जमशेदपुर, झारखण्ड

“दीवाली आने वाली है” ये चार शब्द सुनकर जैसे बचपन में पूरे शरीर में रोमांच सा घुल जाता था वैसे ही आज भी साल शुरू होते ही कलेंडर में ये ही देखा जाता है की **इस साल दीवाली कब पडने वाली है।** अगर आप ये सोच रहें हैं की ऐसा क्या है इस दीवाली का त्योहार में और आखिर ऐसा भी क्या होता दीवाली में तो **ये बात उससे जरूर पूछना जो पैदा हुआ हो 80 के दशक** में और जो पूरे साल इस त्योहार का ऐसे इंतज़ार करता था **जैसे एक छोटा बच्चा स्कूल से घर पहुँचकर अपनी माँ की सूरत देखने का करता है।**

अगर आज भी आँखें बंद करूँ तो उस समय में पर लगाकर पहुँच जाती हूँ जहां ठंडी ठंडी हवा, मौसम को अपने गोद में ले चुकी होती थी। रास्तों से गुजरते वो भीनी भीनी इलायची जैसी पेड़ों की खुशबू, सर्दी के आगमन और दशहरे का आगाज कराने लगती थी।

जैसे ही दशेहरे की छुट्टियाँ पड़ती थी इंतेजार रहता था रात का खाना खाने के बाद का, जब सब अपने घर से चटटाइयाँ चद्दरें लेकर आ जाते थे घर के बीचों बीच एक छोटा से स्टेज बनाकर उसपर होने वाली **रामलीला को देखने** और हर बच्चे का एक सपना होता था स्टेज पर चढ़कर रामलीला में भाग लेने का। चाहे **सीता जी की सखिया या हनुमान जी के साथ वानर सेना** में भाग लेने के बस एक मौके का।

पूरा 9 दिन चलने वाली रामलीला हमारे दिमाग में एक अलग ही छाप छोड़ देती थी और 10वे दिन ट्रक पर बैठकर रामलीला की झांकी में पूरा जिला घूम आते थे। रात को पापा के हाथ पकड़कर मैला देखने और रावण, कुंभकर और मेघनाथ का पुतला जलता देखने के साथ साथ सबके हाथों में तलवार तीर कमान और मुखोटा लगाकर हम सब खुद ही अपने सपने साकार करते थे **कोई रावण कोई राम कोई सीता और कोई मेघनाथ, कुंभकरण।**

जैसे जैसे दशहरे की छुट्टियाँ खतम होने को आती थी, वैसे वैसे दीवाली की आधी तैयारी भी हो जाती थी। दीवाली में क्यूंकी सारे मजदूर गाँव चले जाते थे इसलिए जिसने भी अपने घर सफेदी करानी होती तो उसका कार्यकर्म दशहरे में ही शुरू हो जाता था और **एक सीढ़ी, हाथों में बड़े बड़े सफेदी के डब्बे लिए, पूरे कपड़ों पर सफेदी लगाए मजदूर इधर उधर घूमते दिखते थे।**

घर का एक एक कोना जो पूरे साल साफ नहीं होता था दीवाली की सफाई में एकदम जगमगा उठता था। और **सबसे ज्यादा मजे आते थे कबाड़ी के जिसे हर घर से कुछ न कुछ मिल ही रहा होता था।**

क्यूंकी मैं उत्तराखंड से हूँ तो दीवाली में **घरों की दहलीज़ पर अल्पना/रंगोली जिसे वहाँ "ऐपन"** कहते है बनाते थे **पहले तो लाल मिट्टी लेप कर उसके सूख जाने पर चावलों को पीसकर उसके पानी से अल्पना बनाई जाती थी लेकिन अब धीरे धीरे लाल ओर सफेट पैंट से बनाई जाने लगी है।**

आज भी याद करूँ तो मेरी पहली अल्पना/ रंगोली/ ऐपन पहली बार जब बनाने लगी तो मम्मी ने साफ माना कर दिया। कहीं अच्छी नहीं बनी तो? फिर मेरी जिद्द करने पर घर के पीछे वाले बगीचे में मैंने अपनी पहली पूरी रंगोली बनाई। पहले मम्मी के मदद करने को केवल लक्ष्मी जी के पैर बनाती थी और पहली बार पूरी रंगोली आप विश्वास नहीं करोगे सबने इतनी तारीफ करी की अगली बार से मैं घर के मुख्य द्वार पर रंगोली बनाने लगी थी।

दीवाली का मतलब केवल एक त्योहार नहीं होता था, त्योहार मतलब नए नए कपड़े, मिठाई, रिशतेदारों से मुलाक़ात और दिन भर घर के बाहर खेल कूद। माँ का हर काम मे हाथ बँटाने का कारण केवल मदद नहीं बल्कि जल्दी फ़ारिक होकर बाजार से ख़रीदारी करने जाना होता था। नए नए पकवान बनाए जाते थे खाने के लिए भी और लोगों को देने के लिए भी।

पहले आज की तरह महंगी महंगी चीजें देने का कोई रिवाज नहीं था सब थोड़ी से मिठाई और खूब सारे घर में बने पकवान एक दूसरे के घर ले जाते थे। और **एक इंतजार होता था की दूसरे के घर से अब क्या आयेगा।**

4 दिन पहले से ही दीवाली शुरू हो जाती थी और पूरे 6 दिन भैयादूज तक रोज़ अच्छे अच्छे पकवान खाने को मिलते थे। **पूरा घर दीयों और मोमबतियों से जगमगा उठता था।** अगर आज भी आँख बंद करके सोचूँ तो एक एक पल आँखों के सामने जीवंत हो उठता है।

लेकिन आँख खुलते ही सपना जैसे पक्षी की तरह फुर्र हो जाता है। **आज त्योहार तो आते हैं लेकिन वो उल्लास, वो उत्साह कहीं फीका सा पड़ने लगा है। खुशी तो वो ही है लेकिन लोगों के बीच वो अपनापन कहीं खो सा गया है।** आजकल बड़ी बड़ी इमरतों में रहने वाले लोग त्योहार तो मनाते हैं लेकिन उनमे दिखावट ज्यादा दिखती है।

आजकल **मोबाइल के जमाने में हर चीज बस तस्वीर खींच कर शुरू होती है और उसपर ही खतम। जब तक उसको सबसे सांझा न किया जाये तब तक त्योहार पूरा नहीं माना जाता।** पहले समय में एक तस्वीर खींचवाने भी स्टुडियो में जाना पड़ता था। फिर कैमरा आया तब तक भी रील जब तक पूरी न हो जाए पता ही नहीं चलता था की तस्वीर में किसकी आँखें बंद हो गई। लेकिन अब तो फोन में इतनी तस्वीरें खींच रखी हैं जिनको देखने का समय ही नहीं है।

पकवान की जगह तरह तरह की मिठाइयों जिसमे आधा समय मिलावट ही मिलती है एक दूसरे के घर बाँट दी जाती है। जिसे कोई नहीं खा रहा होता बस मिठाई घूम रही होती है एक घर से दूसरे घर। **महंगे महंगे सामान एक दूसरे के घर अपनी शान दिखने के लिए बांटने का रिवाज सा हो गया है।**

क्या हम अपनी परम्परों से बाहर के देशों की परंपरों को ज्यादा अमल में नहीं ला रहे। ये त्योहार आपसी प्यार और गटबंधन का प्रतीक हैं। अपनी खुशियाँ दूसरों के साथ सांझा करने का एक प्रयास हैं। लेकिन आज की पीढ़ी उसे कहीं भूलती जा रही है और पाश्चात्य संस्कृति को अपनाने लग गई है।

लेकिन आज भी हमारे घर में दीवाली का त्योहार उसी तरह पूरी श्रद्धा के साथ अपनी रीति रिवाजों को ध्यान में रखकर मनाया जाता है जिसका अलग ही मजा है। आज भी जब रंगोली बनाती हूँ तो बचपन की सारी यादें ताजा हो जाती है। कोशिश करती हूँ की **पूर्वजों से मिली धरोहर को इसी तरह सहेजते रहें और आने वाली पीढ़ियों से इसका परिचय करवाते हैं।**

- तोशी पंत जी, उत्तराखंड

भारतीय परम्परा

की मासिक ई-पत्रिका के पुराने
सभी अंकों को देखने के लिए किताब
के आइकन पर स्पर्श करें !!

मानसून का मतलब है न किसी की मात, न किसी की सुन, एक तो बरसेंगे नहीं और बरसेंगे तो रुकेंगे नहीं....!

हे इंद्रदेव,
अगर फुरसत मिले तो एक बार कैलेंडर ज़रूर देख लेना...अब सितंबर का महीना चल रहा क्या चाहते हो इस बार रावण जलकर नहीं डूब कर मरे....!

आज मैं ट्रैफिक जाम में फंस गया, आगे गाड़ियां, पीछे गाड़ियां कसम से 'प्रधानमंत्री' वाली फीलिंग आ रही थी....!

खुश रहने का
एक ही मंत्र है
ओम इग्नोराय नमः....!

खास मौके के लिए कपड़े जूते रखना बंद करें जब मन करे पहन लें, आजकल ज़िंदा रहना एक खास मौका है....!

पेट के अंदर तो सब जाता है
बस पेट अंदर नहीं जाता....!

1) होममेड चॉकलेट -

सामग्री: गुड़ का पाउडर: 1 कप, कोको पाउडर: 1 कप, बटर (मक्खन): 1 कप, बादाम, काजू और पिस्ता की कतरन।

विधि: सबसे पहले, गुड़ का पाउडर, कोको पाउडर और बटर को एक बड़े बर्तन में तब तक अच्छी तरह मिलाएँ जब तक कि वे एक स्मूथ मिश्रण न बन जाएँ। एक बेकिंग ट्रे (या किसी भी सपाट कंटेनर) में बटर पेपर लगाएँ। तैयार मिश्रण को बटर पेपर लगी ट्रे में डाल दें और चारों तरफ एक समान फैला दें। इसे अच्छी तरह से सेट होने के लिए फ्रिज में 8 से 10 घंटे तक रखें। सेट होने के बाद, इसे ट्रे से निकालें और अपनी पसंद के आकार में काट लें। ऊपर से बादाम, काजू या पिस्ता की कतरन से सजाएँ। दीवाली पर यह स्वादिष्ट चॉकलेट अपने मेहमानों को पेश करें।

2). शुगर फ्री ड्राई फ्रूट लड्डू -

सामग्री: बारीक कटा हुआ सूखा अंजीर: 1 कप, बारीक कटा हुआ खजूर: 1 कप, बारीक कटा हुआ सूखा मेवा (अपनी पसंद का): 1 कप, खसखस (Poppy Seeds): आधा कप, शुद्ध घी: 2 चम्मच, सजाने के लिए: बादाम और पिस्ता की कतरन।

विधि: सबसे पहले, एक पैन में खसखस को हल्का सा भूनकर (ड्राई रोस्ट) एक कटोरी में निकाल लें। इसी तरह, बादाम और पिस्ता की कतरन को भी हल्का भूनकर (ड्राई रोस्ट) अलग रख लें। इसी तरह, बादाम और पिस्ता की कतरन को भी हल्का भूनकर (ड्राई रोस्ट) अलग निकाल लें। इसके बाद, एक मिक्सर जार में सूखे अंजीर और खजूर को एक साथ डालकर अच्छी तरह पीस लें। एक मोटे तले वाले पैन में थोड़ा सा घी डालें। घी हल्का गर्म होने पर, खजूर-अंजीर के मिश्रण को पैन में डालकर हल्का सा भूनें। अब इसमें सूखा मेवा, बादाम कतरन और भुनी हुई खसखस मिला दें। मिश्रण को तब तक भूनें जब तक कि वह पैन के किनारे न छोड़ने लग जाए। गैस बंद कर दें। मिश्रण को हल्का ठंडा होने दें। जब यह छूने लायक हो जाए, तब इसके छोटे-छोटे लड्डू बना लें। (वैकल्पिक: आप चाहें तो मिश्रण को ट्रे में जमाकर बर्फी भी बना सकते हैं।) इन लड्डुओं को भुनी हुई खसखस या सूखे मेवे की कतरन में लपेटकर पेपर कप में रखें और दीवाली पर महालक्ष्मी मैया को भोग लगाएँ।

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

115. क्या शबरी ने भगवान श्रीराम को झूठे बेर अर्पित किए और प्रभु ने उन्हें खाया?

उत्तर: वाल्मीकि कृत रामायण में शबरी के प्रसंग का उल्लेख नहीं है। जबकि रामचरितमानस में श्री तुलसीदासजी लिखते हैं:

कंद मूल फल सुरस अति दिए राम कहुं आनि।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारंबार बखानि॥

अर्थात्: शबरी ने अत्यंत रसीले और स्वादिष्ट कंद, मूल और फल श्रीरामजी को अर्पित किए। प्रभु ने बार-बार प्रशंसा करते हुए उन कंद-मूल-फलों को प्रेमपूर्वक खाया।

जनआस्था है कि भगवान को कोई खट्टा बेर अर्पित न हो जाए, इस कारण शबरी प्रत्येक बेर को चख-चख कर (अर्थात् झूठा करके) भगवान श्रीराम को खाने के लिए दे रही थी। यह देखकर लक्ष्मण को क्रोध आ रहा था, लेकिन भगवान भावों के भूखे होते हैं, इस कारण उन्होंने भक्त शबरी के प्रेम का मान रखते हुए उसके झूठे बेर भी खा लिए।

(इस प्रसंग के साथ ही रामचरितमानस के तीसरे सोपान, अरण्य काण्ड का समापन हुआ। अगला काण्ड किष्किन्धा काण्ड है।)

किष्किन्धा काण्ड

116. सुग्रीव कौन था?

उत्तर: सुग्रीव, किष्किन्धा के राजा बाली का छोटा भाई था। दोनों भाइयों में विवाद होने पर बाली ने सुग्रीव को राज्य से निष्कासित कर दिया था।

117. निष्कासन के दौरान सुग्रीव ने कहाँ पर निवास किया था?

उत्तर: राज्य से निष्कासित किए जाने पर सुग्रीव ऋष्यमूक पर्वत पर स्थित मतंग मुनि के आश्रम के आस-पास के क्षेत्र में निवास करने लगा था, क्योंकि ऋषि मतंग के शापवश, बाली स्वयं वहाँ नहीं आता था।

118. मतंग मुनि ने बाली को क्यों और क्या शाप दिया?

उत्तर: एक बार दुन्दुभि नामक दैत्य ने भैंसे का रूप धारण कर किष्किन्धा नरेश बाली को युद्ध के लिए ललकारा। बाली ने उसका वध करके उसकी टाँगें पकड़कर उसे एक योजन दूर

तक फेंक दिया। ऐसा करने के दौरान मृत दानव के खून की बूँदें मतंग मुनि के आश्रम पर गिर गईं। अपने आश्रम के अपवित्र होने पर मतंग मुनि ने शाप दिया कि यदि ऐसा करने वाला इस वन प्रदेश में प्रवेश करेगा तो वह प्राणहीन हो जाएगा।

119. राम व लक्ष्मण को पंपा सरोवर के नज़दीक देखकर सुग्रीव की क्या प्रतिक्रिया हुई?
उत्तर: भगवान श्रीराम व लक्ष्मण को श्रेष्ठ आयुधों (हथियारों) से युक्त देखकर सुग्रीव को यह आशंका हुई कि शायद बाली ने इन्हें उसका (सुग्रीव का) वध करने के लिए भेजा है।

120. सुग्रीव की आशंका का निवारण कैसे हुआ?
उत्तर: वानरराज सुग्रीव ने राजकुमारों के वन में विचरण करने का कारण जानने के लिए पवनकुमार हनुमान जी को उनके पास भेजा।

121. कपिश्रेष्ठ हनुमान जी ने किस रूप में श्रीराम व लक्ष्मण से मुलाकात की?
उत्तर: भगवान श्रीराम व लक्ष्मण, वानर समझकर उनकी बातों को गंभीरता से न लें, इस कारण हनुमान जी ने उनसे सामान्य तपस्वी के वेश में मुलाकात की।

122. भगवान श्रीराम व सुग्रीव के बीच मैत्री किसने और कैसे करवाई?
उत्तर: हनुमान जी ने। उन्होंने दोनों को एक-दूसरे का परिचय कराते हुए अग्नि को साक्षी बनाकर भगवान श्रीराम व सुग्रीव के बीच मैत्री स्थापित की। मैत्री के पश्चात् दोनों ने कहा कि "आज से हम दोनों, एक-दूसरे के प्रिय मित्र हैं; आज से हम दोनों का सुख-दुःख एक हुआ।" इस अवसर पर हनुमान जी ने सुग्रीव को बताया कि भगवान श्रीराम व लक्ष्मण क्यों वन में विचरण कर रहे हैं।

123. मैत्री के पश्चात् सुग्रीव ने भगवान श्रीराम को क्या दिखाया?
उत्तर: रावण द्वारा हरण कर आकाश मार्ग से ले जाते समय सीता माता ने जिन पाँच वानरों को देखकर अपने आभूषण पर्वत पर गिराए थे, वे वानर सुग्रीव सहित उनके चार सचिव ही थे। सुग्रीव ने भगवान श्रीराम को वे आभूषण दिखाए।

क्रमशः... (अगले माह),

– माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राज.)

कुणाल के माता-पिता मध्यम वर्गीय परिवार से थे। कुणाल उनकी इकलौती संतान था, जिसके कारण वे उसे बहुत लाड़-प्यार करते थे। वे इस बात का पूरा ख्याल रखते थे कि उसे किसी भी चीज़ की कमी न हो; उसके कुछ माँगने से पहले ही वे उसकी हर ज़रूरत को पूरा कर देते थे। माता-पिता की इसी अत्यधिक लाड़-प्यार वाली परवरिश ने कुणाल को ज़िद्दी बना दिया था। बचपन में तो उसके शौक आसानी से पूरे हो जाते थे, लेकिन अब कुणाल बड़ा हो रहा था और वह महँगी चीज़ों की ज़िद करने लगा वह कभी महँगी साइकिल माँगता, तो कभी वीडियो गेम; कभी परिवार के साथ घूमने जाता तो महँगी चॉकलेट खरीदने को कहता। अब उसके माता-पिता उसकी हर इच्छा पूरी करने में असमर्थता जताने लगे, जिससे कुणाल चिड़चिड़ा होने लगा था। कुणाल अब आठवीं कक्षा में पढ़ता था।

एक दिन उसने अपनी कक्षा के साथी रोहन को स्मार्ट वॉच पहने हुए देखा। पहले उसने रोहन से उस वॉच की विशेषताएँ पूछीं, उसके बाद वह उसे पहनकर देखने की ज़िद करने लगा। रोहन ने जब मना कर दिया, तो कुणाल आग-बबूला हो उठा। वह रोहन से झगड़ने लगा और गुस्से में पास पड़े पत्थर को उठाकर रोहन की वॉच पर दे मारा। रोहन की कीमती घड़ी टूट गई। यह सब वहाँ खड़े पीटी टीचर ने देखा और वे कुणाल को लेकर प्रिंसिपल के पास गए। प्रिंसिपल ने कुणाल को एक हफ्ते के लिए स्कूल से निष्कासित (बाहर) कर दिया।

स्कूल से निकाले जाने पर भी कुणाल का गुस्सा सातवें आसमान पर था। उसने घर पहुँचकर पापा से ठीक वैसी ही वॉच दिलाने को कहा। जब पापा ने मना कर दिया, तो कुणाल ने गुस्से में पास रखी हुई पापा की अत्यंत **महत्त्वपूर्ण फ़ाइल भी फाड़ दी, जिसमें उनके काम के कई प्रोजेक्ट लिखे हुए थे। अब तो पापा को बहुत गुस्सा आया। उन्होंने उसे खूब डाँटा और अगले ही दिन उसके स्कूल से टीसी (स्थानांतरण प्रमाण पत्र) निकलवाकर उसे बोर्डिंग स्कूल में भर्ती करवा दिया।**

वहाँ कुणाल अकेला रहने लगा। उसे अपना सारा काम स्वयं करना पड़ता था और कोई उसे अपना दोस्त भी नहीं बनाना चाहता था। **अब धीरे-धीरे कुणाल को अपनी की हुई गलतियों पर पछतावा होने लगा था, लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी।**

इसीलिए श्रीमद्भगवद्गीता में सही ही कहा गया है:

"क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।"

अर्थात्: **"क्रोध से सम्मोह (विवेकशून्यता) पैदा होता है, सम्मोह से स्मृति का भ्रम (भूल) होता है। स्मृति के भ्रम से बुद्धि का नाश होता है, और बुद्धि के नाश से व्यक्ति का सर्वनाश हो जाता है।"**

- **प्रिया देवांगन जी, "प्रियू", राजिम, जिला – गरियाबंद (छत्तीसगढ़)**

बच्चों के लिए सीख से भरी कहानी, यह वीडियो बच्चों को जरूर दिखाएँ

मनुष्य जीवन में सुख की खोज एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है। अक्सर लोग यह मानते हैं कि सच्चा सुख साधनों, ऐश्वर्य और भौतिक संसाधनों में निहित है, लेकिन यह धारणा भ्रामक है। भौतिक संपदाएँ क्षणिक होती हैं, क्योंकि मृत्यु के एक झटके से यह सब कुछ छूट जाता है। इतिहास और समाज में ऐसे अनगिनत उदाहरण भरे पड़े हैं कि बड़े से बड़े धनवान व्यक्ति भी अंततः खाली हाथ ही जाते हैं।

वास्तव में, जो वस्तु मनुष्य के साथ दीर्घकाल तक चलती है, वह केवल उसके कर्म हैं। **कर्म ही हमारे भविष्य का निर्माण करते हैं और अगले जन्म की दिशा तय करते हैं।** यही कारण है कि जो लोग निस्वार्थ भाव से दूसरों को खुशी बाँटते हैं, सेवा करते हैं और परोपकार की राह पर चलते हैं, वे साधन-संपन्न लोगों की तुलना में अधिक संतोष, आनंद और दीर्घायु प्राप्त करते हैं।

उदाहरण के लिए, महात्मा गांधी और मदर टेरेसा का जीवन देखिए। उनके पास कोई भौतिक ऐश्वर्य या सुख-सुविधाएँ नहीं थीं, लेकिन करुणा और सेवा से भरे उनके कर्मों ने उन्हें अमर बना दिया। दूसरी ओर, कई बड़े धनकुबेर भी अपने जीवनकाल में ही तनाव और रोगों से जूझते दिखाई देते हैं।

कर्म का फल अकाट्य है। अच्छे कर्म सदैव मनुष्य को ऊँचाई और संतोष प्रदान करते हैं, जबकि बुरे कर्म दुख और पतन का कारण बनते हैं। इसलिए, **मनुष्य जीवन का सच्चा उद्देश्य यही होना चाहिए कि वह उत्तम कार्य करे, दूसरों के लिए उपयोगी बने और अपनी साधारणता में भी असाधारण उदाहरण प्रस्तुत करे। यही वह मार्ग है जो ईश्वर की प्राप्ति और आत्मिक शांति की ओर ले जाता है।**

अतः, **सच्चा सुख भौतिक साधनों में नहीं,**
बल्कि अपने उत्कृष्ट कर्मों में निहित है।
यही जीवन की वास्तविक सार्थकता है।

- अमृतलाल मारू जी, 'रवि', इंदौर (म.प्र.)

सफलता का सच्चा पैमाना: क्या केवल धन ही सब कुछ है?
आजकल अधिकतर लोग सफलता को केवल आर्थिक रूप में देखते हैं—बड़ा बंगला, महँगी गाड़ी, ढेर सारा पैसा, इत्यादि। जिसके पास यह सब हो, समाज में वही व्यक्ति सफल माना जाता है। परंतु, क्या ऐसे लोग वास्तव में सफल होते हैं? यदि करीब से देखा जाए तो अक्सर ऐसे लोग बहुत अकेले और अंदर से टूटे हुए होते हैं। इसका स्पष्ट अर्थ यही है कि सफलता का पैमाना केवल पैसा, धन-दौलत नहीं है, बल्कि कुछ और भी है।

सच्ची सफलता कहाँ निहित है?
सच्चे अर्थों में कहें तो हम पारिवारिक जीवन व्यतीत करते हुए भी सफल हो सकते हैं। एक अच्छे पुत्र-पुत्री, अच्छे माता-पिता, अच्छे दोस्त और अच्छे जीवन-साथी बनकर, अपने माता-पिता की सेवा करते हुए भी हमें सफलता मिल सकती है।

सफलता की पहचान केवल भौतिक चीज़ों से नहीं होती, बल्कि यह हमारे आंतरिक गुणों से भी झलकती है: **चेहरे पर मुस्कान, आँखों में चमक, मन में शांति, बोली में मिठास, शालीन व्यवहार।**

किसी के आँसू पोंछ कर, किसी के चेहरे की उदासी का कारण जानकर और उसके चेहरे पर मुस्कान लाकर भी हम सफल हो सकते हैं।

अपने चुने हुए सपने में खुशी- इन सबसे अलावा, सबसे मुख्य बात यह है कि हमारे सपने क्या हैं? यदि आपने जो सपना चुना है, उसे आप पूरा कर पा रहे हैं और उस कार्य को करते हुए आपको हार्दिक खुशी महसूस हो रही है, तो आप निसंदेह सफल हैं।

एक बड़े दार्शनिक ने कहा था कि, "स्पष्टीकरण देने में अपना कीमती समय मत बर्बाद करिए, क्योंकि लोग केवल वही सुनते हैं, जो वे सुनना चाहते हैं।" इसका सीधा-सा तात्पर्य यह है कि यदि आप जो हैं, वो होने पर यकीन रखते हैं, तो आप सफल हैं।

हे परमेश्वर, सफलता का पैमाना चाहे कुछ भी हो, लेकिन सच्ची सफलता केवल खुशी में है। जिसे जिस काम को करके खुशी और संतोष मिले, सच मानिएगा वही सफल है।

मधु अजमेरा जी, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

वैदिक घड़ी (विक्रमादित्य वैदिक घड़ी) विश्व की पहली ऐसी घड़ी है जो भारतीय पंचांग (पारंपरिक कालगणना प्रणाली) के आधार पर समय प्रदर्शित करती है। यह उज्जैन के जंतर-मंतर वेधशाला परिसर में एक 85 फुट ऊँचे टॉवर पर स्थापित है। यह घड़ी भारत की खगोलीय विरासत को पुनर्जीवित करने का प्रतीक है।

वैदिक घड़ी का सिद्धांत: सूर्य से समय का निर्धारण
वैदिक घड़ी दो सूर्योदयों के बीच के समय को 30 मुहूर्तों में विभाजित करती है। प्रत्येक मुहूर्त 48 मिनट का होता है। इस प्रकार, एक दिन 24 घंटे के बजाय 30 'वैदिक घंटों' का होता है।

स्थानीय सूर्योदय आधारित: यह घड़ी जीपीएस द्वारा वर्तमान स्थान के सूर्योदय के समय के आधार पर स्वतः समय की गणना करती है।

गतिशील समय प्रणाली: मौसम के अनुसार सूर्योदय का समय बदलने से वैदिक घड़ी का दिनांक और तिथि भी स्वतः समायोजित हो जाती है।

वैदिक अंक प्रणाली: संख्याओं का दार्शनिक अर्थ
वैदिक घड़ी में 1 से 12 तक के अंकों को परंपरागत संस्कृत नामों से प्रदर्शित किया गया है, जो हिंदू दर्शन के प्रतीक हैं।

उज्जैन: भारत की खगोलीय राजधानी
कर्क रेखा और शून्य मध्याह्न: उज्जैन कर्क रेखा (Tropic of Cancer) और शून्य देशांतर रेखा के काल्पनिक प्रतिच्छेदन पर स्थित है। 18वीं सदी तक यह भारत की मानक समय रेखा मानी जाती थी।

जंतर-मंतर वेधशाला: 1724 में महाराजा जयसिंह द्वितीय द्वारा निर्मित यह वेधशाला खगोलीय गणनाओं का केंद्र थी। वैदिक घड़ी इसी परिसर में स्थापित है।

पंचांग का स्रोत: विक्रम संवत और विक्रम पंचांग का प्रकाशन उज्जैन से होता है, जो इसके खगोलीय महत्व को रेखांकित करता है।

परंपरा और प्रौद्योगिकी का समन्वय

मोबाइल एप्लिकेशन: 'विक्रमादित्य वैदिक घड़ी' नामक ऐप प्ले स्टोर पर उपलब्ध है, जो वास्तविक समय में तिथि, मुहूर्त, नक्षत्र और ग्रहों की स्थिति दर्शाता है।

खगोलीय प्रदर्शन: वैदिक घड़ी के पृष्ठभूमि में प्रत्येक घंटे द्वादश ज्योतिर्लिंग, राशि चक्र और नासा से प्राप्त खगोलीय घटनाओं (जैसे सूर्य ग्रहण) की छवियाँ प्रदर्शित होती हैं।

वेधशाला एकीकरण: टॉवर पर लगे टेलीस्कोप के माध्यम से रात्रि में खगोलीय घटनाएँ देखी जा सकती हैं।

समाज पर प्रभाव

मुहूर्त भ्रम का निवारण: सामान्य लोग अब तीज-त्योहारों की तिथियाँ, शुभ मुहूर्त और चौघड़िया ज्योतिषियों पर निर्भर हुए बिना स्वयं जान सकते हैं।

शिक्षा का साधन: यह घड़ी भारत की प्राचीन खगोलीय उन्नति को दर्शाती है, जहाँ सूर्य सिद्धांत के आधार पर सटीक गणनाएँ की जाती थीं।

पर्यटन आकर्षण का केंद्र: यह घड़ी उज्जैन में एक प्रमुख पर्यटन स्थल बन गई है, जो भारत की वैज्ञानिक विरासत को वैश्विक पहचान दे रही है।

समय के साथ सभ्यता की यात्रा

वैदिक घड़ी केवल एक यंत्र नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक स्मृति और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का जीवंत प्रमाण है। यह हमें याद दिलाती है कि जब पश्चिम में ग्रीनविच की अवधारणा भी नहीं थी, तब उज्जैन के खगोलशास्त्री सूर्य की गति से समय निर्धारित कर रहे थे। आधुनिक तकनीक से युक्त यह घड़ी हमारी भावी पीढ़ियों को प्रेरित करेगी कि वे अपनी विरासत पर गर्व करें और उसे नवीन रूपों में सँवारें।

सूर्य का स्पंदन ही इसकी टिक-टिक है, और ब्रह्मांड का ज्ञान इसकी सुइयाँ हैं। वैदिक घड़ी भारत की वैज्ञानिक चेतना का पुनर्जागरण है।

- विवेक रंजन जी श्रीवास्तव, इंदौर (मध्य प्रदेश)

ईश्वर कभी जल्दी नहीं
करता और देर भी
नहीं करता वो बस
सही वक्त पर कमाल
करता है...!

अपने वो नहीं होते जो, तस्वीरों
मे साथ खड़े होते है,
अपने वो होते है जो, तकलीफो
मे साथ खड़े होते है...!

बहुत देर से समझ
आता है,
देर
हो जाने का मतलब...!

आपका शांत और
स्थिर मन, जीवन का
असली ब्रह्मास्त्र है...!

हमेशा इतने छोटे बनो कि
हर व्यक्ति तुम्हारे साथ बैठ
सके, और अपने कामों से
इतना बड़ा बनो कि जब तुम
उठो तो कोई बैठा न रहे...!

संघर्ष से टकराकर प्राप्त की
गई सफलताएं...
स्वाभिमान पैदा करती है,
अभिमान नहीं...!

प्रकृति का महापर्व: छठ पूजा – समर्पण, तपस्या और आस्था का अनूठा संगम

छठ पूजा सूर्य देव, उनकी बहन छठी मइया (प्रकृति), जल, वायु और सम्पूर्ण जीवनदायिनी प्रकृति को समर्पित एक चार दिवसीय लोक पर्व है। यह पर्व पृथ्वी पर जीवन देने के लिए आभार व्यक्त करने और कल्याण की कामना करने का माध्यम है। यह कठिन अनुष्ठान कार्तिक शुक्ल चतुर्थी से प्रारंभ होकर सप्तमी तक चलता है, जिसमें नहाय-खाय, खरना, संध्या अर्घ्य और उषा अर्घ्य शामिल हैं।

तपस्यापूर्ण अनुष्ठान और नियम

छठ व्रत किसी कठोर तपस्या से कम नहीं है। व्रती (जिन्हें 'परवैतिन' कहते हैं) 36 घंटों का निर्जला (बिना पानी पिए) उपवास रखते हैं और लंबे समय तक पानी में खड़े होकर सूर्योपासना करते हैं।

व्रती के लिए विशेष परंपराएँ:

- व्रती फर्श पर ही रात बिताते हैं, सुखद शैय्या का त्याग करते हुए।
- सभी लोग नए वस्त्र पहनते हैं, और व्रती के लिए बिना सिलाई वाले वस्त्र (महिलाएँ साड़ी, पुरुष धोती) पहनना अनिवार्य है।

चार दिवसीय पर्व का सार:

पहला दिन: नहाय-खाय (कार्तिक शुक्ल चतुर्थी) - स्नान के बाद शुद्ध शाकाहारी भोजन (कद्दू-भात) ग्रहण कर व्रत का संकल्प। भोजन मिट्टी के चूल्हे पर बनता है और व्रती सबसे पहले ग्रहण करते हैं।

दूसरा दिन: लोहंडा/खरना (कार्तिक शुक्ल पंचमी) - पूरे दिन का उपवास। शाम को गुड़ की खीर और रोटी का प्रसाद ग्रहण कर अगले 36 घंटे के निर्जला व्रत की शुरुआत।

तीसरा दिन: संध्या अर्घ्य (कार्तिक शुक्ल षष्ठी) - डूबते हुए सूर्य को अरख देना। बाँस की टोकरी (दउरा) में ठेकुआ, चावल के लड्डू आदि प्रसाद भरकर घाट तक ले जाना। पानी में खड़े होकर दूध और जल से अर्घ्य देना।

चौथा दिन: उषा अर्घ्य (कार्तिक शुक्ल सप्तमी) - सूर्योदय से पहले घाट पर पहुँचकर उगते हुए सूर्य को अरख देना। संतान की रक्षा और परिवार की सुख-शांति की प्रार्थना करना। घर आकर **'ब्रह्म बाबा' (पीपल)** की पूजा के बाद कच्चे दूध का शरबत और प्रसाद खाकर व्रत का पारण करना।

छठ पूजा से जुड़ी पौराणिक कथा - www.

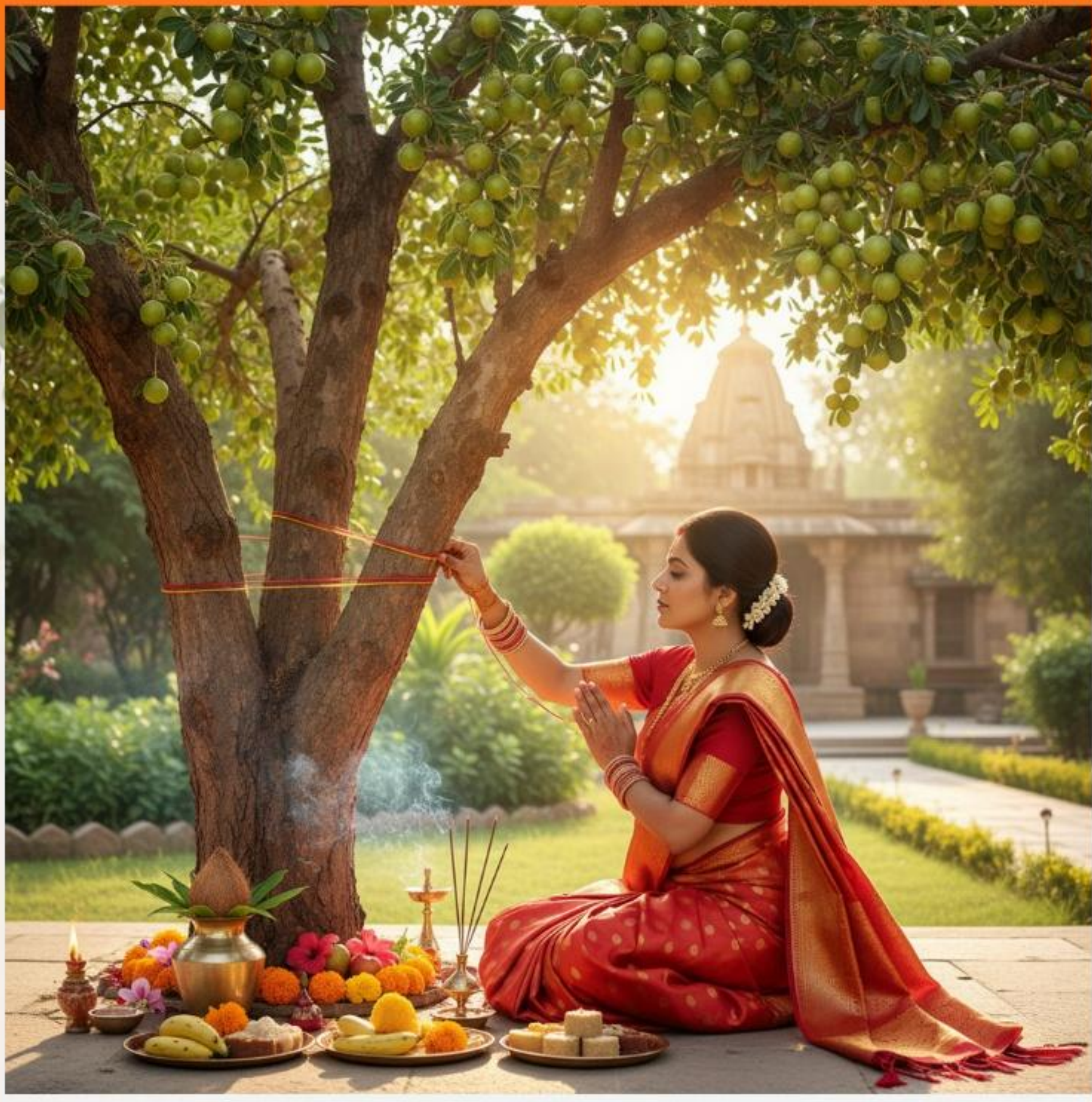

कार्तिक मास के आते ही मन में अनायास एक नया उत्साह संचारित होने लगता है। इस महीने से शुरू होने वाला उत्सवों का क्रम लगातार चलता रहता है और जन-जीवन में एक नवीन ऊर्जा का संचार करता है। इसी क्रम में, **दीपावली के नौ दिनों के पश्चात् अक्षय नवमी का पर्व मनाया जाता है।** अक्षय नवमी को **"आँवला नवमी"** भी कहा जाता है, जो कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को मनाने की परंपरा है।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इसी दिन से "सतयुग" का प्रारंभ माना गया है।

आँवला वृक्ष का पूजन और कामना

यह त्योहार अधिकतर उत्तर भारत में मनाया जाता है और यह पर्व प्रकृति तथा वृक्षों को समर्पित है। इस दिन महिलाएँ आँवले के वृक्ष का पूजन-अर्चन करती हैं। सुबह तैयार होकर, महिलाएँ आँवले के वृक्ष के नीचे जाती हैं और उसे श्रृंगार की वस्तुएँ, भोग, एवं प्रसाद अर्पित करती हैं। वे वृक्ष की 108 परिक्रमा करते हुए उसके समान ही जीवन में फलने-फूलने और समृद्धि की कामना करती हैं। पूजन के बाद, वृक्ष की छाया में ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है, तत्पश्चात् महिलाएँ स्वयं प्रसाद स्वरूप भोजन ग्रहण करती हैं। वे अपनी संतानों का रोली टीका करके उनके दीर्घायु होने की कामना करती हैं।

आँवले का औषधीय और धार्मिक महत्त्व

आँवले का फल पौष्टिकता की खान है और यह वृक्ष कार्तिक मास में फलता है। जब वृक्षों की शाखाओं पर हरे-हरे फल गुच्छों में लटके होते हैं, तो यह दृश्य हृदय को प्रफुल्लित कर देता है। आँवले को सर्वोत्कृष्ट औषधि माना गया है। चरक ऋषि के अनुसार, शारीरिक अवनति को रोकने वाले (अवस्था स्थापक) द्रव्यों में आँवला सबसे प्रधान है। **धार्मिक कथाओं के अनुसार, समुद्र मंथन से उत्पन्न अमृत की छलकी बूँदों से ही इस वृक्ष का आविर्भाव हुआ। इसीलिए इसे "अमृतफल" भी कहा जाता है।** प्राचीन ग्रंथों में इसे माता के समान कल्याण करने वाला और अवस्था को बनाए रखने वाला बताया गया है। यह वृक्ष देवताओं को भी प्रिय है और माना जाता है कि इसका जन्म हमारे भारत में ही हुआ है। इस वृक्ष का प्रत्येक भाग औषधीय गुणों से भरपूर है, अतः यह पूजनीय है।

- गीता गुप्ता जी, उन्नाव (उत्तर प्रदेश)

पूरा पढ़े - www.

73030 21123
www.bhartiyaparampara.com